मायोसीन युग

सन्दर्भ: हाल ही में, जापान के एक शोध समूह ने असाधारण रूप से अच्छी तरह से संरक्षित जीवाश्म समूह का पता लगाया है, जो कि अंतिम मायोसीन युग से संबंधित है।

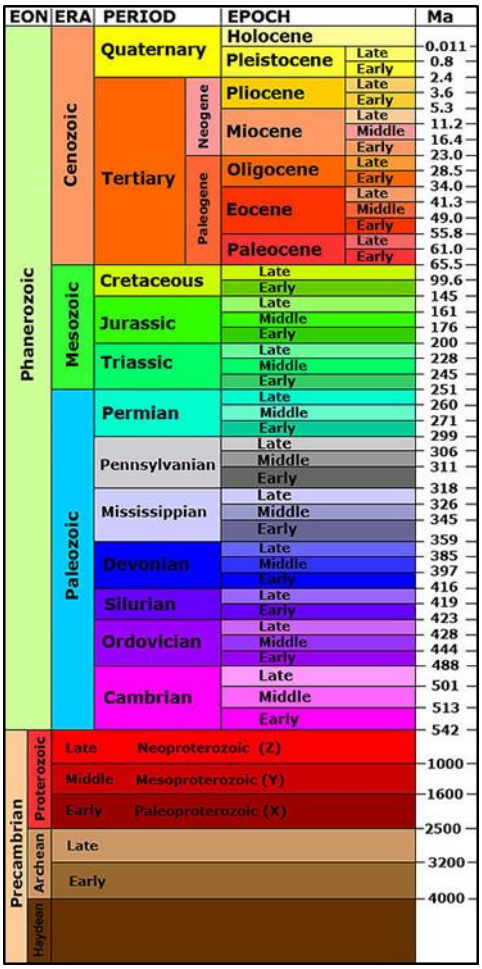

- मायोसीन युग एक लंबी अवधि थी जिसमें ओलिगोसीन के ठंडा होने से पृथ्वी की जलवायु का फिर से निर्माण हुआ।
- इस युग के दौरान वैश्विक तापमान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- इस दौरान स्तनपायी प्रजातियों की कुल संख्या में भी वृद्धि देखी गई।
- मायोसीन युग को सामान्यतः **तीन चरणों में विभाजित किया गया है**:
  - प्रारंभिक मायोसीन काल (23 मिलियन से 16 मिलियन वर्ष पूर्व)
  - मध्य मायोसीन काल (16 मिलियन से 11.6 मिलियन वर्ष पूर्व)
  - उत्तरवर्ती मायोसीन काल (11.6 मिलियन से 5.3 मिलियन वर्ष पूर्व)

उस अवधि के दौरान परिवर्तन

- भारत एशियन प्लेट का हिस्सा है और जब एशिया महाद्वीप दूसरी प्लेटों से टकराकर ऊपर उठा तो हिमालय तथा तिब्बती पठार का निर्माण हुआ।
- बाद में जैसे ही अफ्रीका यूरोप से जुड़ने के लिए उत्तर की ओर बढ़ा, टेथिस सागर समाप्त हो गया।
- मायोसीन में शीतलन की प्रवृत्ति देखी गई, जिससे शुष्क जलवायु निर्मित हुई और स्तनधारी विविधता कम हो गई।
- घास के मैदानों का विस्तार हुआ, जिससे शाकाहारी जीवों को बदलते आवासों के अनुकूल ढलने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- आज भी अफ्रीका में प्रचुर मात्रा में मायोसीन जीवाश्म मौजूद हैं।
- मायोसीन काल के दौरान समुद्र का स्तर गिर गया, जिससे वर्तमान फ्लोरिडा की उत्पत्ति हुई।
- महासागरों ने परिसंचरण पैटर्न और पोषक तत्वों के वितरण में बदलाव का अनुभव किया, जिससे उत्पादकता प्रभावित हुई।
- मायोसीन ने समुद्री प्लवक और मोलस्क में त्वरित विकास को बढ़ावा दिया, जिससे जैविक विविधता में वृद्धि हुई।

संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (पांचवां संशोधन) विधेयक, 2022

सन्दर्भ: संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (पांचवां संशोधन) विधेयक, 2022 को संसद द्वारा पारित कर दिया गया है।

- संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश 1950 को संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (पांचवां संशोधन) विधेयक, 2022 द्वारा संशोधित किया जाएगा।
- संशोधन में धनुहार, धनुवार, किसान, सौंरा, सोनरा और बिंझिया समुदायों को छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजाति सूची में जोड़ा गया है।
- इसमें भरिया भूमिया समुदाय के पर्यायवाची के रूप में भुइंया समुदाय शामिल हैं।
- पंडो समुदाय के नाम के तीन देवनागरी संस्करण भी शामिल किए जाएंगे।
- यह विधेयक छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदायों को लाभान्वित करता है और देश की प्रगति में योगदान देता है, जिससे राज्य के लगभग 72,000 आदिवासी लोगों को लाभ होगा।

किसी समुदाय को सूची से कैसे जोड़ा या हटाया जाता है?

- यह प्रक्रिया राज्य या केंद्र शासित प्रदेश स्तर पर शुरू होती है, जहां सरकार किसी समुदाय को एससी या एसटी सूची में जोड़ना या हटाना चाहती है।
- अंतिम निर्णय राष्ट्रपति के कार्यालय द्वारा दी गई शक्तियों का उपयोग करते हुए एक अधिसूचना के माध्यम से किया जाता है (**अनुच्छेद 341 और 342**)।

- अनुसूचित जनजातियों या अनुसूचित जातियों की सूची में शामिल करना या बाहर करना तभी प्रभावी होता है जब राष्ट्रपति संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950 और संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश, 1950 में संशोधन करने वाले विधेयक को लोकसभा और राज्यसभा दोनों की मंजूरी के बाद अपनी मंजूरी देते हैं।
- **प्रक्रिया:**
    - राज्य सरकार समुदायों को एससी/एसटी सूची से जोड़ने या हटाने की सिफारिश करती है।
    - इस संदर्भ में केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय को राज्य सरकार से प्रस्ताव प्राप्त होता है।
    - जनजातीय मामलों का मंत्रालय प्रस्ताव की जांच करता है और इसे भारत के रजिस्ट्रार जनरल (आरजीआई) को भेजता है।
    - आरजीआई एक नए समुदाय को अनुसूचित जनजाति के रूप में परिभाषित करने के लिए लोकुर समिति के मानदंडों का उपयोग करता है।
    - एक बार आरजीआई द्वारा अनुमोदित होने के बाद, यह प्रस्ताव राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग या राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के पास जाता है।
    - इसके बाद प्रस्ताव अंतर-मंत्रालयी विचार-विमर्श और कैबिनेट में अंतिम मंजूरी के लिए केंद्र सरकार के पास वापस आ जाता है।

यूनेस्को में अमेरिका का पुनः प्रवेश

सन्दर्भ: हाल ही में जिल बिडेन ने पेरिस में यूनेस्को के ध्वजारोहण समारोह में भाग लिया, जो संगठन में यूएसए की वापसी का प्रतीक है।

पृष्ठभूमि

- वर्ष 2017 में, अमेरिका कथित तौर पर इज़राइल विरोधी पूर्वाग्रह का हवाला देते हुए यूनेस्को से बाहर हो गया था।
- यह निर्णय यूनेस्को द्वारा वर्ष 2011 में फिलिस्तीन को एक सदस्य राज्य के रूप में शामिल करने के बाद शुरू हुआ, जिसके कारण अमेरिका और इज़राइल ने एजेंसी के लिए फंडिंग बंद कर दी थी।
- अमेरिका वर्ष 2018 में यूनेस्को में फिर से शामिल हुआ, जो 1984 में पिछले निकासी के बाद दूसरी वापसी है।
- यू.एस. ने यूनेस्को के बकाया और ऋण को कवर करने के लिए वर्ष 2024 के बजट के लिए 150 मिलियन डॉलर का अनुरोध किया, साथ ही बाद के वर्षों में इसी तरह के अनुरोधों की योजना बनाई जब तक कि 619 मिलियन डॉलर का पूरा कर्ज चुकाया नहीं जाता।
- इससे पहले, अमेरिका यूनेस्को का सबसे बड़ा निवेशक था, जो एजेंसी के कुल फंडिंग में 22% का योगदान देता था, यह यूनेस्को के $534 मिलियन के वार्षिक परिचालन बजट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है।

पुनः प्रवेश के कारण

- अमेरिका के समूह से निकलने के बाद चीन की बढ़ती नेतृत्व भूमिका के कारण अमेरिका पुनः यूनेस्को में लौट आया।
- अमेरिका की अनुपस्थिति के दौरान चीन ने एआई और तकनीकी नियमों को आकार देने में अपना प्रभाव प्राप्त किया।
- यह कदम यूनेस्को के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है, जो अपने विश्व धरोहर कार्यक्रम और जलवायु परिवर्तन और लड़कियों की शिक्षा पर पहल के लिए जाना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को)

- यूनेस्को की स्थापना वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र (UN) की एक विशेष एजेंसी के रूप में की गई थी।
- इसमें 195 सदस्य और 8 एसोसिएट सदस्य हैं, जिसमें भारत एक संस्थापक सदस्य है।
- संगठन का नेतृत्व एक महानिदेशक करता है और दुनिया भर में इसके 50 से अधिक क्षेत्रीय कार्यालय हैं, जिसका मुख्यालय पेरिस में है।
- यूनेस्को के उद्देश्यों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देना, विज्ञान और ज्ञान के माध्यम से सतत विकास, सामाजिक और नैतिक चुनौतियों का समाधान करना, सांस्कृतिक विविधता और संवाद को बढ़ावा देना और समावेशी ज्ञान समाज का निर्माण करना शामिल है।
- विश्व धरोहर स्थलों के संबंध में, यूनेस्को मानवता के लिए उत्कृष्ट मूल्य की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की पहचान, सुरक्षा और संरक्षण को प्रोत्साहित करता है।
- यूनेस्को द्वारा अपनाया गया 1972 का विश्व धरोहर सम्मेलन, प्रकृति संरक्षण को सांस्कृतिक संपत्तियों के संरक्षण से जोड़ता है, लोगों और प्रकृति के बीच बातचीत और उनके बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता को पहचानता है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा संबंध

सन्दर्भ : हाल ही में 8वीं भारत-ऑस्ट्रेलिया रक्षा नीति वार्ता कैनबरा में सम्पन्न हुई।

- कैनबरा वार्ता में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग की समीक्षा की गई और संबंधों को मजबूत करने के लिए नये क्षेत्रों की खोज की गई।
- दोनों पक्षों ने रक्षा उपकरणों के सह-विकास और सह-उत्पादन पर जोर दिया।
- दोनों देशों ने आपसी विश्वास और साझा मूल्यों पर आधारित व्यापक रणनीतिक साझेदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
- जून 2020 से **"रक्षा"** व्यापक रणनीतिक साझेदारी का एक प्रमुख स्तंभ है।
- दोनों देश एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी और समृद्ध भारत-प्रशांत क्षेत्र का दृष्टिकोण साझा करते हैं।
- दोनों देशों के मध्य मंत्री स्तर पर 2+2 वार्ता की जाती है।
- वार्ता के दौरान दोनों देश एक हाइड्रोग्राफी समझौते को अंतिम रूप देने पर सहमत हुए हैं और भू-राजनीतिक, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

रणनीतिक संबंध

- 2020 में,आभासी शिखर सम्मेलन के दौरान भारत-ऑस्ट्रेलिया द्विपक्षीय संबंधों को एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया गया था।
- 2021 में, ग्लासगो में COP26 के दौरान दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की मुलाकात हुई थी ।
- भारत-ऑस्ट्रेलिया आभासी शिखर सम्मेलन और विदेश मंत्रियों की बैठक के साथ, 2022 और 2023 में उच्च-स्तरीय संपर्क और मंत्रिस्तरीय यात्राएँ संपन्न की ।
- दूसरे भारत-ऑस्ट्रेलिया वर्चुअल शिखर सम्मेलन में कौशल आदान-प्रदान के लिए प्रवासन और गतिशीलता साझेदारी व्यवस्था पर प्रमुख घोषणाएं की गईं।

रक्षा और सुरक्षा संबंध

- भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी 2020 में नेताओं के आभासी शिखर सम्मेलन के दौरान बढ़ी।
- रक्षा सहयोग में 2020 में हस्ताक्षरित 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता और म्यूचुअल लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट (एमएलएसए) शामिल हैं।
- संयुक्त सैन्य अभ्यास, जैसे "मालाबार" और "तालिसमान सेबर", क्वाड समूह के साथ-साथ भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका के बीच परस्पर सहयोग को भी बढ़ावा देते हैं।
- ऑस्ट्रेलिया-चीन संबंधों में तनाव 5जी नेटवर्क निर्णयों और मानवाधिकार उल्लंघनों की आलोचना सहित विभिन्न मुद्दों के कारण उत्पन्न हुआ।
- भारत को सीमा पर चीनी आक्रामकता का सामना करना पड़ता है, जो क्षेत्रीय स्थिरता और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के महत्व को उजागर करता है।
- दोनों देश आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समावेशी क्षेत्रीय संस्थानों का समर्थन करते हैं।
- QUAD में उनकी भागीदारी साझा हितों और चिंताओं को दर्शाती है।

स्टारफ़ायर (STARFIRE) एल्गोरिथम

प्रसंग:विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत एक स्वायत्त संस्थान, रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट (आरआरआई) के वैज्ञानिकों ने हाल ही में **स्टारफ़ायर** नामक एक एल्गोरिदम बनाया है।

स्टारफ़ायर का आशय पृथ्वी के चारों ओर की कक्षाओं में स्थलीय रेडियो फ्रीक्वेंसी हस्तक्षेप का अनुकरण करना (STARFIRE:Simulation of TerrestriAl Radio Frequency Interference in oRbits around Earth)।

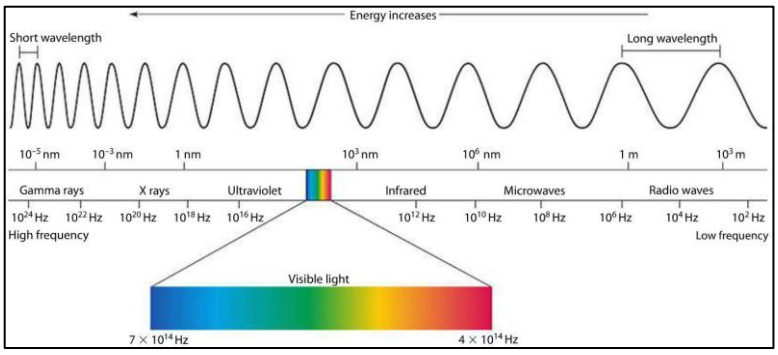

लाभ और उपयोग:

- स्टारफ़ायर एल्गोरिदम एफएम रेडियो, वाईफाई, मोबाइल टावर, रडार, उपग्रह और संचार उपकरणों जैसे विभिन्न स्रोतों से रेडियो फ्रीक्वेंसी हस्तक्षेप का अनुमान लगाता है।
- यह इष्टतम संचालन के लिए एंटेना को डिजाइन और फाइन-ट्यूनिंग करने में सहायता करता है।
- यह अंतरिक्ष में अवांछित रेडियो फ्रीक्वेंसी हस्तक्षेप संकेतों का मानचित्रण कर सकता है।
- यह तकनीक अंतरिक्ष-आधारित खगोल विज्ञान मिशनों से डेटा को समृद्ध करती है।
- एल्गोरिदम भविष्य के मिशनों के लिए कक्षा चयन में उपयोगी है।
- वैज्ञानिकों ने मॉडल विकसित करने के लिए छह देशों के एफएम ट्रांसमीटर स्टेशन डेटा का उपयोग किया: कनाडा (8,443 स्टेशन), यूएसए (28,072 स्टेशन), जापान (टोक्यो - 21 स्टेशन), ऑस्ट्रेलिया (2,664 स्टेशन), जर्मनी (2,500 स्टेशन), और दक्षिण अफ्रीका (1,731 स्टेशन)।

रेडियो फ्रीक्वेंसी हस्तक्षेप

- रेडियो फ्रीक्वेंसी ऊर्जा संचालन या विकिरण आसन्न इलेक्ट्रॉनिक या विद्युत उपकरणों में हस्तक्षेप पैदा कर सकता है।
- इस हस्तक्षेप से उपग्रह संचालन और रेडियो खगोल विज्ञान भी बाधित हो सकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक और विद्युत उपकरणों के सामान्य कामकाज को बनाए रखने के लिए इस तरह के हस्तक्षेप को सीमित करना महत्वपूर्ण है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

अविश्वास प्रस्ताव

अविश्वास प्रस्ताव क्या है?

अविश्वास प्रस्ताव में सरकार के बहुमत का परीक्षण किया जाता है। 50 सहयोगियों के समर्थन वाला कोई भी लोकसभा सांसद इसे पेश कर सकता है। लोकसभा इस प्रस्ताव को पारित कर मंत्रिपरिषद को हटा सकती है। अनुच्छेद 75 मंत्रिपरिषद को सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी बनाता है।

वर्तमान स्थिति:

- अविश्वास प्रस्ताव मणिपुर के मौजूदा मुद्दों से जुड़ा है क्योंकि विपक्ष मणिपुर की वर्तमान स्थिति पर प्रधानमंत्री से बयान की मांग कर रहा है।
- हालाँकि इस प्रस्ताव से सरकार के बहुमत पर असर पड़ने की संभावना नहीं है, यह मामले पर चर्चा करने और सरकार को जवाबदेह ठहराने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।

अविश्वास प्रस्ताव के उदाहरण:

- 1963 में जवाहरलाल नेहरू की सरकार
- 1978 में मोरारजी देसाई की सरकार अविश्वास प्रस्ताव से पराजित होने वाली पहली सरकार बनी
- 1999 में अटल बिहारी वाजपेई की सरकार
- 2008 में मनमोहन सिंह की सरकार
- इंदिरा गांधी को अपने कार्यकाल के दौरान सबसे अधिक अविश्वास प्रस्तावों (15 बार) का सामना करना पड़ा।
- ज्योति बसु को सीपीआई (एम) नेता के रूप में 4 अविश्वास प्रस्तावों का सामना करना पड़ा।
- 1989 में भाजपा द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद वी.पी. सिंह की सरकार भंग हो गई।
- नरसिम्हा राव 1993 में अविश्वास प्रस्ताव से बच गए लेकिन बाद में उन्होंने इस्तीफा दे दिया।
- आई.के. गुजराल की सरकार ने बहुमत न होने के कारण 1998 में इस्तीफा दे दिया।

हिंडन नदी

उद्गम: हिंडन नदी, यमुना नदी की एक सहायक नदी है, जो उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में ऊपरी शिवालिक में शाकुंभरी देवी श्रृंखला से निकलती है।

जलग्रहण क्षेत्र: नदी वर्षा आधारित है और इसका जलग्रहण क्षेत्र लगभग 7,083 वर्ग किलोमीटर है।

प्रवाह: यह नोएडा के सेक्टर-150 में यमुना नदी में शामिल होने से पहले मुजफ्फरनगर, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद और गौतम बौद्ध नगर जिलों से होकर लगभग 400 किलोमीटर तक बहती है।

सहायक नदी: काली नदी, शिवालिक पहाड़ियों की राजाजी रेंज से निकलती है, जो हिंडन नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है तथा यमुना नदी में शामिल होने से पहले इसमें विलीन हो जाती है।

पौराणिक महत्व: माना जाता है कि सरधना के पास प्राचीन महादेव मंदिर महाभारत काल का है और हिंडन एवं कृष्णा नदियों (काली नदी) के संगम से जुड़ा है।

ऐतिहासिक महत्व: हिंडन नदी के किनारे स्थित आलमगीरपुर स्थल सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ा है।
प्रदूषण: बिना उपचार के छोड़े गए औद्योगिक अपशिष्टों के कारण हिंडन नदी गंभीर प्रदूषण का सामना करती है, जिसके परिणामस्वरूप घुलनशील ऑक्सीजन का स्तर बेहद कम हो जाता है।
पुनर्जीवन प्रयास: हिंडन, काली और कृष्णा बचाओ अभियान जैसे गैर सरकारी संगठन एवं स्थानीय पहल जागरूकता बढ़ाकर, ठोस अपशिष्ट हटाकर और बाढ़ के मैदानों के पास खेती में रासायनिक उपयोग को कम करके नदी को पुनर्जीवित करने के लिए काम कर रहे हैं।

मैंग्रोव सेल

पश्चिम बंगाल ने मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर राज्य में 'मैंग्रोव सेल' की स्थापना की घोषणा की। मैंग्रोव सेल भारत सरकार द्वारा पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के तहत स्थापित एक विशेष इकाई है।
उद्देश्य: मैंग्रोव सेल का उद्देश्य मैंग्रोव प्रबंधन में राज्य सरकार के प्रयासों में निरंतरता लाना है।
कार्य योजना: सेल के पास मैंग्रोव के वृक्षारोपण के लिए एक कार्य योजना होगी और गैर सरकारी संगठनों के साथ रखरखाव और समन्वय पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
पारिस्थितिकी तंत्र के लिए मैंग्रोव का महत्व:

- **जैव विविधता:** दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों सहित विविध पौधों और जानवरों की प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण आवास।
- **तटीय सुरक्षा:** कटाव, तूफान और सुनामी के खिलाफ प्राकृतिक बफर, तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा।
- **कार्बन पृथक्करण:** जलवायु परिवर्तन को कम करने, कार्बन डाइऑक्साइड को संग्रहित करने में प्रभावी।
- **नर्सरी मैदान:** समुद्री प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण नर्सरी मैदान, मत्स्य पालन और जैव विविधता का समर्थन।
- **जल शोधन:** पानी की गुणवत्ता बनाए रखते हुए पानी को फ़िल्टर और शुद्ध करना।
- **पारिस्थितिक संतुलन:** पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन को बढ़ावा देते हुए, पक्षियों और वन्यजीवों के लिए घोंसला बनाने और प्रजनन स्थल प्रदान करना।

फास्ट रेडियो बर्स्ट

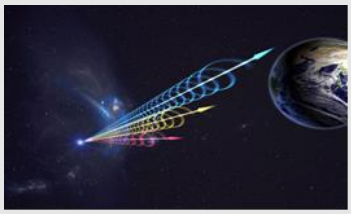

- फास्ट रेडियो बर्स्ट (एफआरबी) दूर की आकाशगंगाओं से रेडियो प्रकाश का रहस्यमय उत्सर्जन है।
- एफआरबी एक मिलीसेकंड में उतनी ही ऊर्जा उत्सर्जित करते हैं जितनी सूर्य कई हफ्तों में करता है।
- वे क्षणिक और क्षणभंगुर रेडियो तरंगें हैं, जिनका बड़े रेडियो दूरबीनों का उपयोग करके अध्ययन करना चुनौतीपूर्ण है।
- ऐसा माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति नष्ट होते हुए तारों के अंगारों से हुई है।
- FRB 20190520B को दोहराने के हालिया अध्ययन से अत्यधिक परिवर्तनशील चुंबकीय क्षेत्र की ताकत का पता चला, जो एक बाइनरी स्टार सिस्टम का सुझाव देता है।
- रेडियो टेलीस्कोप एफआरबी के अध्ययन और ब्रह्मांडीय रहस्यों की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- पहला एफआरबी 2007 में खोजा गया, जून 2021 तक 140 और पाए गए, लेकिन उनकी उत्पत्ति अज्ञात बनी हुई है।

गल्फ स्ट्रीम अलर्ट

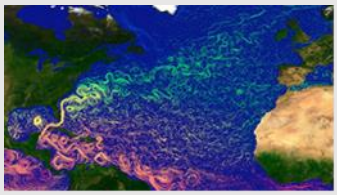

- गल्फ स्ट्रीम प्रणाली एक गर्म महासागरीय धारा है जो अटलांटिक धाराओं और यूरोपीय मौसम को प्रभावित करती है।
- वैज्ञानिक अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि बढ़ते वैश्विक तापमान और मीठे पानी के प्रवाह के कारण 2025 तक अटलांटिक मेरिडियनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (Atlantic Meridional Overturning Circulation- AMOC) का पतन हो सकता है।
- पतन के कारण यूरोप में तापमान 10-15 डिग्री तक कम हो सकता है और पूर्वी अमेरिका में समुद्र का स्तर बढ़ सकता है।
- अनिश्चितता बनी रहती है; पतन का सटीक समय और निश्चितता अच्छी तरह से स्थापित नहीं है।
- उत्तरी अटलांटिक जलवायु प्रणाली में अचानक परिवर्तन की संभावना महत्वपूर्ण है और इसे खारिज नहीं किया जाना चाहिए।

पीएम किसान समृद्धि केंद्र

पीएम किसान समृद्धि केंद्र के बारे में:

- पीएम किसान समृद्धि केंद्र (पीएमकेएसके) रसायन और उर्वरक मंत्रालय के तहत भारत सरकार की एक किसान-केंद्रित पहल है।
- इसका लक्ष्य देश भर में खुदरा उर्वरक दुकानों को किसान सेवा केंद्रों में परिवर्तित करना है।
- पीएमकेएसके विभिन्न कृषि सेवाएं प्रदान करता है, जिसमें कृषि-इनपुट वितरण, मिट्टी और बीज परीक्षण सुविधाएं और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी शामिल है।
- सरकार की योजना देशभर में 1.25 लाख पीएमकेएसके स्थापित करने की है।
- ब्लॉक/जिला स्तर के आउटलेटों पर खुदरा विक्रेताओं की क्षमता निर्माण एक प्रमुख उद्देश्य है।
- पीएमकेएसके प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के माध्यम से किसानों की वित्तीय जरूरतों का समर्थन करता है।
- यह टिकाऊ कृषि पद्धतियों और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन को बढ़ावा देता है।

समुद्री घास

- समुद्री घासें प्राकृतिक सिंक के रूप में कार्य करती हैं, भूमि पर जंगलों की तुलना में प्रति वर्ग मील अधिक कार्बन जमा करती हैं और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करती हैं।
- 1860 और 2016 के बीच यूरोप में समुद्री घास का क्षेत्र एक तिहाई कम हो गया, जिससे कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग में वृद्धि हुई।
- GEOMAR हेल्महोल्ट्ज़ सेंटर के नेतृत्व में कील, जर्मनी में सीस्टोर सीग्रास रेस्टोरेशन प्रोजेक्ट में स्थानीय नागरिकों को समुद्री घास के मैदानों को स्वायत्त रूप से बहाल करने के लिए प्रशिक्षण देना शामिल है।
- समुद्री घासें मत्स्य पालन में सहायता करती हैं, तटरेखाओं को कटाव से बचाती हैं और समुद्री जैव विविधता में योगदान करती हैं।
- पुनरुद्धार के प्रयासों में बीज के बजाय हाथ से रोपे गए अंकुरों का उपयोग किया जाता है, जिससे प्रक्रिया अधिक कुशल हो जाती है।
- इस पहल का उद्देश्य बाल्टिक सागर को फिर से हरा-भरा करने और इसके पारिस्थितिक संतुलन को संरक्षित करने के लिए समुद्री घास की बहाली के प्रयासों को बढ़ाना है।

समाचार में स्थान

न्यू मैक्सिको रेगिस्तान

16 जुलाई, 1945 को मैनहट्टन परियोजना के हिस्से के रूप में न्यू मैक्सिको रेगिस्तान में पहला परमाणु बम परीक्षण हुआ, जिसे ट्रिनिटी परीक्षण के रूप में जाना जाता है।

स्थान: न्यू मैक्सिको रेगिस्तान दक्षिण-पश्चिमी संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित है, मुख्य रूप से न्यू मैक्सिको राज्य में, और वृहद चिहुआहुआन रेगिस्तान का एक हिस्सा है, जो मैक्सिको तक फैला हुआ है।

जैव विविधता: शुष्क वातावरण के अनुकूल विविध पौधों और जानवरों की प्रजातियों का समर्थन करता है।

पर्यटक आकर्षण: आश्चर्यजनक परिदृश्य, व्हाइट सैंड्स नेशनल पार्क जैसे राष्ट्रीय उद्यान और बाह्य गतिविधियों हेतु पर्यटकों को आकर्षित करता है।

व्हाइट सैंड्स मिसाइल रेंज: यह क्षेत्र व्हाइट सैंड्स मिसाइल रेंज का घर है, जो एक प्रमुख सैन्य परीक्षण सुविधा है।

आर्थिक गतिविधियाँ: कृषि, खनन और पर्यटन द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था।

पारिस्थितिक चिंताएँ: मरुस्थलीकरण और पानी की कमी गंभीर पर्यावरणीय मुद्दे हैं।